



शीतलाष्टमी

चैत्र कृष्ण पक्ष में शीतला अष्टमी आती है। इस दिन शीतला माता की पूजा की जाती है और ठंडा भोजन किया जाता है।

कथा- एक बुढ़िया थी। वह बासोड़ा के दिन शीतला माता की पूजा कर ठंडा भोजन ग्रहण करती थी। उस गांव में अन्य कोई ऐसा नहीं करता था। एक दिन किसी कारण से गांव में आग लग गई। बुढ़िया की झोपड़ी को छोड़कर सभी के घर जल गए।

यह खबर जब राजा के पास पहुंची, तो राजा ने मंत्रियों को भेजकर बुढ़िया माई को बुलवाया।

बुढ़िया जब राजा के पास पहुंचती, तो राजा ने उससे पूछा कि 'हे बुढ़िया माई, सारे गांव में



आग लग गई, परन्तु तुम्हारी झोपड़ी नहीं जली इसका क्या कारण है?'

बुढ़िया माई बोली- 'महाराज, मैं बासोड़ा के दिन शीतला माता की पूजा करती हूँ तथा एक दिन पहले का बना ठंडा भोजन करती हूँ। माता की कृपा से मेरी झोपड़ी बच गई।

राजा ने तत्काल गांव में घोषणा करवा दी कि हर कोई बासोड़ा के दिन शीतला माता की पूजा करे तथा ठंडा भोजन खाए।



गणगौर

चैत्र शुक्ल तृतीया को गणगौर का त्योहार मनाया जाता है। यह पूजा होली के दूसरे दिन से प्रारम्भ हो सोलह दिन तक चलती है।

कथा- प्राचीन लोक कथाओं के अनुसार राजा के यहां जौ-चने तथा माली के खेत में दूब बोई गई। राजा के जौ-चने अच्छी तरह से उग रहे थे, लेकिन माली की दूब दिन-प्रतिदिन कम होती जा रही थी। यह देखकर माली चिंतित हो उठा और उसने आसपास के लोगों से इसका कारण पूछा। उन्होंने बताया कि 'लड़कियां सुबह आती हैं और तुम्हारे यहां से दूब तोड़ कर ले जाती हैं।' दूसरे दिन माली लड़कियों को पकड़ने के लिए एक बैलगाड़ी के नीचे छिपकर बैठ गया। प्रातःकाल जब लड़कियां दूब तोड़ने आईं और दूब तोड़ने लगीं, तो माली बैलगाड़ी के नीचे से बाहर आया और उसने उन लड़कियों में से किसी का लोटा, किसी की डोर, वस्त्र एवं गहने इत्यादि छीन लिए और कहने लगा 'तुम सब मेरे यहां से दूब क्यों तोड़ कर ले जाती हो?' लड़कियों ने बताया कि 'हम गणगौर का पूजन कर रही हैं। पूजन के लिए दूब तोड़कर ले जाती हैं। यह सुनकर माली ने उन लड़कियों का सभी सामान वापस लौटा दिया।

सोलहवें दिन गणगौर पूजन कर लड़कियां एवं महिलाएं प्रसाद, फल, लापसी आदि लेकर माली के घर आ गईं। उन्होंने सभी सामग्री माली की मां को दे दी। मां ने सभी सामान कोटे के अन्दर रख दिया। थोड़ी देर बाद माली आया और उसने अपनी मां से कुछ खाने के मांगा। तब मां बोली- 'गांव की लड़कियां'।



आज खूब फल, लापसी आदि दे गई है। तू भर पेट खाले, कोटे में रखी है।' मां के कहे अनुसार माली ने जैसे ही कोठा खोला, तो देखा कोठा हीरे, मोतियों से जगमगा रहा है। वहां अपार धन-सम्पदा पड़ी है। यह चमत्कार गणगौर माता की कपा से हुआ।

वट-सावित्री

ज्येष्ठ माह की अमावस्या को वड़ अमावस कहा जाता है। महिलाएं अपने अखण्ड सौभाग्य एवं कल्याण की कामना से यह व्रत करती हैं।

कथा- एक समय की बात है कि भद्रदेश में अश्वपति नामक महान प्रतापी और ज्ञानी राजा राज्य करता था। उसके कोई संतान नहीं थी। राजा ने पंडितों से पुत्र योग के बारे में पूछा, तो उन्होंने कहा 'हे राजा, आपके पुत्र योग तो नहीं है, परन्तु एक कन्या होगी और वह भी बारह वर्ष की आयु में विधवा हो जाएगी।'

राजा ने कहा- 'चाहे कन्या ही हो, लेकिन मुझे कोई निःसंतान तो नहीं कहेगा।'

पंडितों के कहे अनुसार राजा ने यज्ञ करवाया, वट सावित्री का व्रत रखा। उसी के प्रताप से कुछ समय पश्चात् उन्हें कन्या रत्न की प्राप्ति हुई, जिसका नाम उन्होंने सावित्री रखा। समय बीतता गया। कन्या बड़ी होने लगी। जब सावित्री को वर खोजने के लिए कहा गया, तो उसने द्युमत्सेन के पुत्र सत्यवान की कीर्ति सुनकर उन्हें पति रूप में वरण कर लिया।

इधर यह बात जब ऋषि नारद को ज्ञात हुई, तो वे राजा अश्वपति के पास आकर बोले- 'आपकी कन्या ने वर खोजने में निःसन्देह भारी भूल की है। सत्यवान गुणवान तथा धर्मात्मा है लेकिन वह अल्प आयु है। एक वर्ष पश्चात्



उसकी मृत्यु हो जाएगी।

नारद जी की बात सुनकर राजा अश्वपति उदास हो गए। उन्होंने अपनी पुत्री को समझाया कि- 'ऐसे अल्प आयु व्यक्ति से विवाह करना उचित नहीं है, इसलिए तुम कोई और वर चुन लो।' इस पर सावित्री बोली- 'आर्य, कन्याएं अपने पति का वरण एक बार ही करती हैं, अतः अब चाहे जो हो, मैं सत्यवान को ही वर रूप में स्वीकार करूंगी।'

सावित्री के निश्चय को सुनकर नारदजी ने अश्वपति को समझाया कि- 'तुमको सावित्री का विवाह सत्यवान से हो कर देना चाहिए, इतना कहकर नारद जी अपने स्थान को चले गए।

राजा अश्वपति विवाह का समस्त सामान और कन्या को लेकर वृद्ध सचिव सहित उसी वन में गए, जहां राजश्री से नष्ट, अपनी रानी और राजकुमार सहित एक वृक्ष के नीचे घुमत्सेन रहते थे। अन्ततोगत्वा विधि-विधान पूर्वक सावित्री और सत्यवान का विवाह सम्पन्न हो गया।

वन में रहते हुए सावित्री अपने सास-ससुर की खूब सेवा करने लगी। समय व्यतीत होता गया, लेकिन सावित्री नारदजी की भविष्यवाणी को ध्यान में रखते हुए एक-एक दिन गिनती जा रही थी। उसने जब पति का मरणकाल समीप आते देखा, तब तीन दिन पहले हो से वह उपवास करने लगी। तीसरे दिन उसने पितृदेवों की पूजा की। वही दिन नारदजी का बतलाया हुआ था। उस दिन जब सत्यवान कुल्हाड़ी लेकर लकड़ी काटने के लिए वन जाने को तैयार हुआ, तब सावित्री भी अपने सास-ससुर की आज्ञा लेकर उसके साथ वन को चली गई।

वन में पहुंचकर सत्यवान लकड़ी काटने के लिए जैसे ही वृक्ष पर चढ़ा, तो उसके मस्तिष्क में असहनीय पीड़ा होने लगी। वह वृक्ष से नीचे उतरकर सावित्री की गोद में लेट गया। थोड़ी देर बाद सावित्री ने देखा कि अनेक दूतों के साथ हाथ में पाश लिए यमराज खड़े हैं। प्रथम तो यमराज ने सावित्री को ईश्वरीय नियम सुनाया और उसके बाद सत्यवान के अंगुष्ठप्रमाण जीवन को लेकर दक्षिण दिशा की ओर चल दिए। सावित्री भी यमराज के पीछे चली। जब बहुत दूर तक सावित्री यमराज के पीछे चलती रही, तब यमराज ने कहा- 'हे पतिपरायणे। जहां तक मनुष्य मनुष्य का साथ दे सकता है, वहां तक तुमने अपने पति का साथ दिया। अब तम चापस घर को लौट जाओ।'

यह सुनकर सावित्री बोली- 'यमराज। जहां तक मेरे पति जाएंगे, वहीं मुझे जाना चाहिए। यही सनातन सत्य है।'

यमराज ने सावित्री की धर्मपरायण वाणी सुनकर वर मांगने को कहा। यमराज की बात सुनकर सावित्री ने वर मांगा- 'मेरे सास-ससुर अंधे हैं, उन्हें दिव्य ज्योति दें।' यमराज ने 'तथास्तु' कहकर उसे लौट जाने को कहा, लेकिन सावित्री उनके पीछे चलते हुए बोली 'भगवान! जहां मेरे पति देव जाते हों, वहां उनके पीछे चलने में मुझे कोई श्रम या कष्ट नहीं हो सकता। एक पति-परायण होना मेरा कर्तव्य है, दूसरे आप धर्मराज हैं। अतः सत्यपुरुषों का समागम भी थोड़े पुण्य का फल नहीं है।'

सावित्री के ऐसे धर्म एवं श्रद्धायुक्त वचन सुनकर यमराज ने पुनः वर मांगने को कहा।

सावित्री ने वर मांगा कि 'मेरे ससुर द्युमत्सेन का खोया हुआ राज्य उन्हें वापस मिल जाए।' यमराज ने 'तथास्तु' कहकर उसे लौट जाने को कहा, परन्तु सावित्री अडिग रही।

सावित्री की पति-भक्ति और निष्ठा देखकर यमराज द्रवीभूत हो गए। उन्होंने सावित्री से एक और वर मांगने के लिए कहा। तब सावित्री ने वर मांगते हुए कहा- 'मैं सत्यवान के सौ पुत्रों की मां बनना चाहती हूँ। कृपा कर आप मुझे यह वरदान दें।' इस अन्तिम वरदान को देते हुए यमराज ने सत्यवान को अपने पाश से मुक्त कर दिया और वह अदृश्य हो गए। सावित्री वट वृक्ष के पास आई। वट वृक्ष के नीचे पड़े सत्यवान के मृत शरीर में जीव का संचार हुआ और वह उठकर बैठ गए।

सत्यवान के माता-पिता की आंखें ठीक हो गईं और उनका खोया हुआ राज्य भी उन्हें वापस मिल गया। इस सबसे सावित्री के अनुपम व्रत की कीर्ति समस्त देश में फैल गई।



निर्जला एकादशी

ज्येष्ठ मास शुक्ल पक्ष की एकादशी को निर्जला एकादशी कहते हैं। इसका व्रत करने से सभी एकादशियों के व्रतों का फल मिलता है।

कथा- पौराणिक कथाओं के अनुसार एक बार व्यास मुनि से भीम ने आग्रह किया कि- 'हे मुनिवर मेरी पूज्य माता कुन्ती, धाता युधिष्ठिर, अर्जुन, नकुल, सहदेव और द्रौपदी सहित सभी एकादशी का व्रत करते हैं और मुझे भी एकादशी के दिन अन्न खाने के लिए मना करते हैं। इस दिन मैं पूजा-पाठ, दान आदि तो करता हूँ, परन्तु मुझसे भूखा नहीं रहा जाता। मेरे पेट [उदर] में अग्नि का वास है, जो अन्न खाने पर ही शान्त होती है। इसलिए- हे मुनिवर कृपा करके आप मुझे एक ऐसा व्रत बताएं, जिसके करने से एक ही दिन में मुझे पूरा फल मिल जाए।

भीमसेन की जिज्ञासापूर्ण बात सुनकर व्यास मुनि ने उत्तर दिया कि- 'हे वायु पुत्र तुम ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष की एकादशी का निर्जल व्रत करो तथा 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' मंत्र का जाप करो। इससे तुम्हारा सब एकादशियों को अन्न खाने का पाप दूर हो जाएगा। साथ ही पूरे वर्ष की एकादशियों के व्रत का भी पुण्य-लाभ होगा। इस दिन दिए गए दान का भी विशेष फल मिलता है, अतः दान-पुण्य करो।'

मुनि वेदव्यास के अनुसार भीमसेन ने निर्जला एकादशी का व्रत किया और वे पाप-मुक्त हो गए। निर्जला एकादशी का व्रत अत्यन्त संयम-साध्य है, अतः नियमपूर्वक व्रत के पश्चात् सामर्थ्य के अनुसार दान का विधान है।



भाखरियो सोमवार

कथा- अम्बावती नगर में चारुदत्त नामक एक ब्राह्मण अपनी पत्नी के साथ रहता था। वह ब्राह्मण बहुत गरीब था। इसलिए भिक्षा मांगकर अपनी गुजर बसर करता था। ब्राह्मण और उसकी पत्नी भगवान शिव के भक्त थे और बहुत श्रद्धा से प्रतिदिन पूजा किया करते थे। घर आए अतिथियों का सम्मान कर उन्हें श्रद्धापूर्वक भोजन कराया करते थे। पति-पत्नी गरीब होते हुए भी सत्यवादी थे।

ब्राह्मण दम्पति की भक्ति-भावना एवं अतिथि सत्कार से प्रभावित होकर भगवान साधु का वेश धारण कर उनके घर पहुंचे। साधु को घर आए देखकर चारुदत्त बहुत प्रसन्न हुआ। उसने साधु की खूब आवभगत की और अपने बांट का भोजन श्रद्धापूर्वक साधु को कराया।

साधु-महात्मा ने भोजन करते हुए चारुदत्त से पूछा- 'हे भूदेव! आप दुःखी लगते हैं? क्या मैं आपकी कोई मदद कर सकता हूँ?'

साधु के वचन सुनते ही चारुदत्त की आखे भर आईं। उसने विनम्र भाव से कहा- 'महात्मा जी मैं पंडित हूँ, ज्ञानी हूँ, परन्तु अन्नदाता मुझ से रुष्ट हैं। मैं भगवान शिव की भक्ति करता हूँ, फिर भी शिव कृपा मुझ पर नहीं होती। कृपा करके आप मुझे कोई उपाय बताएं, जिससे मेरे कष्ट दूर हों और हम दोनों पति-पत्नी भूखे नहीं रहें।'

ब्राह्मण को बातें सुनकर साधु महात्मा ने धैर्य बंधाते हुए चारुदत्त को समझाया- 'सुख-दुःख तो जीवन के दो पहलू हैं, ये दोनों हमेशा साथ-साथ चलते हैं, परन्तु पूर्व जन्म के कर्मों का फल तो मनुष्य को भुगतना ही पड़ता है। इसलिए तुम दुःखी मत हो। इतना कहकर साधु महात्मा एक पल के लिए मौन हो गए। थोड़ी देर बाद वह पुनः बोले- 'हे ब्राह्मण तुम भाखरियो सोमवार का व्रत करो। इससे तुम्हारे पूर्व जन्म के पाप तो नष्ट होंगे ही, दुःख दरिद्र्य का भी नाश होगा। इस व्रत से भगवान शंकर तुम पर प्रसन्न होंगे।'

साधु को बातें सुनकर ब्राह्मण दम्पति बहुत प्रसन्न हुए और मन ही मन उन्होंने भाखरियो सोमवार का व्रत करने का निश्चय कर साधु महात्मा को आदर सहित विदा किया। जब श्रावण मास का प्रथम सोमवार आया तो ब्राह्मण दम्पति ने यह व्रत करना प्रारम्भ किया। इस व्रत के प्रभाव से चारुदत्त के पूर्व जन्म के कष्ट दूर होते चले गए। उसे राजाश्रय प्राप्त हुआ और वह राज पुरोहित बन गया।

यह व्रत साढ़े तीन माह तक लगातार किया जाता है। कार्तिक सुदी चतुर्दशी को इसका

उद्घाटन होता है।

नाग पंचमी

कथा- एक साहूकार के सात बेटे एवं सात बहनें थीं। एक दिन सातों बहनें मिट्टी खोदने गईं। मिट्टी खोदते समय अचानक एक सांप निकल आया, उसी समय सभी देवरानियों-जेठानियों ने उसे मारना चाहा, परन्तु सबसे छोटी बहू ने उसकी रक्षा यह कहते हुए की कि मेरे पीहर में भी बांबी में सांप रहता है और मैंने उसे धर्म भाई बना रखा है।

अगले दिन उसकी छहों जेठानियों ने उसे उपले [छाने] लाने के लिए अकेले ही यह सोचकर भेज दिया कि वहां पर यदि सांप निकलेगा तो उसे डस लेगा। जब छोटी बहू उपले लेने जंगल पहुंची तो वहां सांप बैठा था, उसे देखकर वह फुफकारने लगा तो वह बोली, 'भाई जी राम-राम।' इस पर सांप बोला- 'तुमने मुझे भाई कहा है, इसलिए मैं तुम्हें नहीं डसूंगा।'

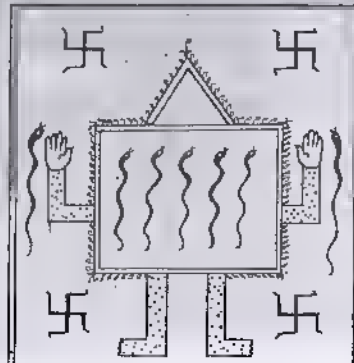
यह सुन वह सांप को आशीष देती हुई बोली- 'जिओ मेरे नाग- नागोलिया, जिओ वासुकि नाग।' आशीष सुन नाग ने अपनी मुंह बोली बहन को लाड़ किया और चलते समय उसे नेवर [पायल] भी दी। वह नेवर पहन कर घर आई, तो उसे देख सभी जेठानियों को आश्चर्य हुआ कि उसे सांप ने डसा नहीं, बल्कि नेवर और दी है।

थोड़ी देर में ही (सांप) भाई उसके घर आया और कहने लगा- 'मेरी बहन को भेजो।' ससुराल वालों ने छोटी बहू को मिठाई देकर विदा किया। रास्ते में खून की नदी आई, तो वह

सांप भाई से बोली- 'मैं इसे कैसे पार करूं?' सांप ने उसे पूंछ पकड़ने के लिए कहा। जैसे ही उन दोनों ने नदी में पैर रखे, तो उसमें खून के स्थान पर दूध बहने लगा।

यह देख दोनों ने आसानी से नदी को पार किया और वह पीहर पहुंच गई। पीहर में सभी ने उसकी खूब आभ्यगत की।

एक दिन मां ने बेटों से कहा 'मैं कहीं, बाहर जा रही हूँ, तुम अपने छोटे भाइयों (सांपों) को दूध पिला देना।' उसने गरम-गरम दूध भाइयों को पिला दिया, जिससे किसी का मन जलजला और किसी की पूंछ



एक दिन वह पड़ोसन से बातें कर रही थी, तभी किसी बात पर उसने कहा- 'मेरे खाडिया-बाडिया भाइयों की सौगन्ध।'

यह बात सुनकर भाई को बुरा लगा। उसने मां से कहा- 'मां बहन को आए काफी दिन हो गए हैं इसे ससुराल भेज दो' जब उसे बहुत सारी-धन-दौलत देकर विदा करने लगे तो उसकी चाची-ताई ने ताना दिया कि 'तुम्हारे भाई तुम्हें बहुत प्यार करते हैं, लेकिन तुम्हें सातवें कमरे की चाबी तो नहीं दी।'

यह सुनकर बहन ने अपने नाग भाई से सातवें कमरे की चाबी मांगी तो- भाई ने बहुत मना किया, लेकिन जब वह नहीं मानी तो उसे चाबी दे दी।

जैसे ही उसने सातवां कमरा खोला, उसमें एक बुढ़ा अजगर बैठा मिला। उसे देखकर वह फुफकारने लगा। उसने कहा- 'बाबाजी राम-राम।' अजगर बोला- 'तुम मुझे बाबाजी नहीं कहती, तो मैं तुम्हें डस लेता। वह बोली- 'आप तो मेरे धर्म पिता हैं, आप मुझे कैसे डस सकते हैं।' इतना कह वह आगे बोली- 'ओ म्हाारा नाग-नागोलिया जिओ वासुकि नाग।' इस प्रकार की वाणी सुनकर अजगर ने भी उसे बहुत लाड-प्यार किया और विदा करते समय एक कीमती हार दे दिया।

इस प्रकार वह बहुत सारी धन-दौलत लेकर ससुराल पहुंचती, तो उसकी छहों जेठानियां यह सब देखकर दंग रह गईं। उन्हें उससे ईर्ष्या होने लगी।

एक जेठानी ने जाकर राजा से शिकायत की कि 'मेरी छोटी देवरानी के पास अमूल्य हार है, वह तो महारानी के गले में होना चाहिए।' यह सुनकर राजा ने हार लेने के लिए मंत्री सहित सिपाहियों को छोटी बहू के पास भेज दिया।

छोटी बहू ने वह हार मंत्री को दे तो दिया, लेकिन मन ही मन भयभीत हो विचार करने लगी कि कहीं यह हार रानी के पहनते ही नाग रूप में परिवर्तित न हो जाए।

दरबारी हार लेकर राजा के पास पहुंचे। वह हार राजा ने रानी को पहनने के लिए दिया। रानी के हार पहनते ही नाग रूप में परिवर्तित हो गया। यह देख सब बहुत भयभीत हो गए। राजा ने तुरन्त बहू को दरबार में बुलवाया। बहू के पहुंचते ही रानी के गले का वह नाग पुनः हार बन गया। राजा ने इसका कारण पूछा, तो उसने सारी बात बता दी कि मेरे कोई भाई नहीं है, अतः मैंने नाग को अपना भाई बना रखा है। उन्होंने ही मुझे यह हार दिया है। राजा ने उसकी बात सुनी और हार के साथ-साथ उसे अन्य उपहार देकर सम्मान सहित विदा किया।

इसके बाद जेठानी ने छोटी बहू की शिकायत उसके पति से की। पति के डांटने पर, उसने सभी बातें पति को बता दीं। यह सुनकर पति ने सारे गांव में घोषणा करवा दी कि नाग पंचमी के

दिन सत्रो ठंडा भोजन करें; ज्वरानी खुले, लायना निमालें और नाग देवता की पूजा करें।

सातूड़ी तीज

भाद्रपद शुक्ल पक्ष की तृतीया को यह त्योहार मनाया जाता है। अलग-अलग स्थानों पर इसे सतवा तीज, बड़ी तीज, कजली तीज, बूढ़ी तीज आदि नामों से जाना जाता है।

कथा- एक साहूकार के चार बेटे और चार बहनें थीं। तीनों बहनों के पीहर में भरापूरा परिवार था, परन्तु छोटी बहू के पीहर में कोई नहीं था। बड़ी तीज पर तीनों बहनों के पीहर से सत्तू आया, लेकिन छोटी बहू का मन यह सोचकर उदास हो गया कि उसके लिए सत्तू कहां से आएगा? उसने अपने पति से कहा- 'मेरे लिए भी सत्तू लेकर आना, चाहें इसके लिए कुछ भी क्यों न करना पड़े।'

पति ने सत्तू लाने का काफी प्रयास किया पर सफलता नहीं मिली। जब वह शाम को घर लौटा और पत्नी का उदास चेहरा देखा तो उसे रात भर नींद नहीं आई। दूसरे दिन तीज थी।

वह रात्रि के अंधेरे में घर से निकला और एक बनिए की दुकान में घुस गया। वहां चने की दाल और चक्की रखी थी। उसने दाल लेकर पीसना शुरू कर दिया। चक्की की आवाज सुनकर साहूकार के घरवाले जाग गए। उन्होंने उसे पकड़कर पूछा- 'यहां क्या कर रहे हो?'

लड़के ने जवाब दिया- 'कल सातूड़ी तीज है और मेरी पत्नी के पीहर में कोई नहीं है, अतः उसके लिए सत्तू चोरी करने आया हूँ। आपकी दुकान में दाल, चीनी और घी सभी था, इसलिए आपके यहां से सत्तू बनाकर ले जा रहा था। यह सुनकर साहूकार बोला- 'तुम अपने घर जाओ। आज से तुम्हारी पत्नी हमारी धर्म बेटी हुई।'

वह घर लौट आया। दूसरे दिन सवेरे ही साहूकार ने नौकरों के साथ चार तरह के सत्तू के पिंडे, साड़ी और अन्य पूजा का सामान उसके घर भिजवा दिया।

जेठानियां यह सब देखकर कहने लगीं- 'तुम्हारे तो पीहर में कोई नहीं है, फिर इतना सब कहां से आया है?' देवरानी ने सभी को वह बात बताई कि यह सब धर्म विप्लव ने भेजा है।



बछबारस

भादवा कृष्ण पक्ष की बारस के दिन यह त्योहार मनाया जाता है। इस दिन गाय एवं बछड़े तथा तालाब की पूजा की जाती है।

कथा- एक साहूकार के सात बेटे एवं कई पोते थे। साहूकार ने एक तालाब बनवाया, परन्तु बारह वर्ष बीत जाने पर भी उसमें पानी नहीं भरा। इससे साहूकार की बहुत चिन्ता हुई। उसने पंडितों को बुलाकर तालाब में पानी न भर पाने का कारण एवं उपाय पूछा।

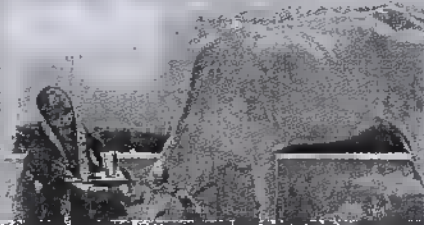
पंडित ने साहूकार की बताया कि यदि 'तुम अपने बड़े पुत्र या पौत्र की बलि दे दो, तो तालाब में पानी भर जाएगा।' साहूकार ने बड़े पौत्र की बलि दे दी। तभी जंग से बरसात हुई और तालाब पानी से लबालब भर गया। कुछ दिनों पश्चात् बछबारस का त्योहार आया। सभी गांववासी तालाब पूजने चले।

साहूकार के घर से भी सभी लोग तालाब पूजन के लिए जब चलने लगे तो दासी को उन्होंने कहा कि गेहूँ और धाकला बना लेना। गेहूँ और धाकला गाय के दोनों बछड़ों के नाम थे। दासी ने दोनों बछड़ों को काटकर बना लिया। उधर साहूकार तथा साहूकारनी ने धूमधाम से तालाब की पूजा की। साहूकार की बड़ी बहू भी इस मौके पर उपस्थित थी। तालाब पूजन के बाद जब बहू ने अपने बेटे को लड्डू उठाने के लिए आवाज लगाई, तो उसी बेटे ने जिसकी बलि उसके दादा ने दी थी, तालाब से निकलकर माँ के पास आ लड्डू उठा लिया। इस समय वह मिट्टी एवं गोबर में सना हुआ था। यह दृश्य देखकर साहूकार चकित रह गया, फिर उसने बलि वाली सारी बात बहू को बता दी और कहा- बछबारस की कृपा से तुम्हारा बेटा वापस आ गया है।

पूजा करके जब वे घर लौटे तो गाय के दोनों बछड़े दिखाई नहीं दिए तो उन्होंने अपनी दासी से पूछा। दासी ने कहा- 'उन्हें पकाने के लिए आप कह गए थे। इसलिए मैंने दोनों को पका दिया है।' यह सुनकर साहूकार और उसकी पत्नी दोनों बहुत दुःखी हुए। उन्होंने कहा- 'एक पाप तो हम उतार कर आए हैं और तुमने दूसरे का भागीदार और बना दिया। साहूकार ने गाय के बछड़ों को गड़ढा खोदकर हांडी सहित गड़वा दिया और दुःखी मन से बैठ गए।' शाम के समय जब गाय चरकर वापस घर आई,

तो रम्भा-रम्भा कर अपने बच्चों को पुकारने लगी और सींगों से

जमीन को खोदेन लगी। तभी दोनों बछड़े गोबर-मिट्टी से सने हुए वापस आ गए। इस बात की खबर जब साहूकार को मिली, तो वह दौड़कर घर आया। उसने देखा बछड़े अपनी माँ का दूध पी रहे हैं। तभी से साहूकार ने गांव में मुनादी करवा दी कि हर बेटे की माँ बछबारस के दिन तालाब



तथा गाय बछड़े की पूजा करें

हरतालिका तीज

भादवा शुक्ल तृतीया को महिलाएं अखण्ड सौभाग्य के लिए तथा कन्याएं अच्छे वर की प्राप्ति की कामना के लिए यह व्रत करती हैं।

कथा- इस व्रत की कथा भगवान शंकर ने पार्वती को उनके पूर्व जन्म का स्मरण कराते हुए इस प्रकार कही कि - 'हे पार्वती तुमने मुझे पति रूप में पाने के लिए एक बार गंगा किनारे बहुत ही कठिन तपस्या की थी। इस प्रकार तुमको कष्ट सहते देखकर तुम्हारे पिता हिमालय को बड़ा दुःख हुआ।'

उसी कठिन तपस्या के समय नारद मुनि ने तुम्हें देखा और तुम्हारे पिता हिमालय से कहा कि - 'भगवान विष्णु आपकी कन्या से विवाह करना चाहते हैं।'



नारद की इस बनावटी बात को पिता ने सच मानते हुए यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया।

इतनी बातचीत कर नारद विष्णु लोक चले गए और भगवान विष्णु से बोले कि - 'मैंने हिमालय की पुत्री पार्वती के साथ आपका विवाह निश्चित किया है।

आप इसे स्वीकार करें।'

इधर नारदजी के चले जाने के पश्चात् जब हिमालय ने तुमसे कहा कि- 'मैंने तुम्हारा विवाह श्री विष्णु भगवान के साथ निश्चय किया है, तो यह अनहोनी बात सुनकर तुम्हें अत्यन्त दुःख हुआ और तुम विलाप करने लगी।'

पिता के पीठ फेरते ही तुमको अत्यन्त व्याकुल और विलाप करते देख एक सखी ने तुमसे तुम्हारे दुःख का कारण पूछा।

जब तुमने अपनी सखी को समस्त वृत्तान्त सुनाया, तो सखी बोली कि 'तुम्हें प्राण त्यागने की कोई आवश्यकता नहीं है। मैं तुमको ऐसी जगह ले चलूंगी जहां आपके पिता जी भी आप को नहीं ढूँढ पाएंगे। ऐसी सलाह देकर सखी तुमको सघन वन में ले गई। तुम्हारे पिता ने तुम्हें बहुत खोजा। तुम्हें कहीं न पाकर और विष्णु के साथ तुम्हारा विवाह का वचन भंग होने की चिन्ता से वे मूर्च्छित हो गए।

इधर तुम सखी सहित नदी के किनारे एक गुफा में प्रवेश कर मेरे नाम की तपस्या करने लगी। भाद्रपद शुक्ल पक्ष की तृतीया को उपवास रखकर शिवलिंग की स्थापना कर पूजन एवं रात्रि जागरण करने लगी। 'हे प्रिय! तुम्हारे व्रत और तपस्या से मैं अति प्रसन्न हुआ और मैंने तुमसे कहा वरदान मांगो'।

तब तुमने कहा कि 'यदि, आप प्रसन्न हैं, तो मुझे अपनी अर्द्धाङ्गिनी बनाना स्वीकार करें'।

इस पर मैं तुम्हें वरदान देकर कैलास चला गया। सवेरा होते ही तुमने पूजन सामग्री नदी में विसर्जित की, स्नान किया और सखी समेत पारण किया। हिमालय स्वयं तुमको खोजते हुए वहां आ पहुंचे। तब तुमने अपने पिता को घर छोड़ने का कारण बताते हुए कहा कि- 'आप शिवजी के साथ मेरा विवाह करने का वचन दें, अन्यथा मैं घर नहीं चलूंगी' तुम्हारे मान-सम्मान की पूर्ति के लिए हिमाचल राजा ने तुम्हारा विवाह शास्त्र-विधि से मेरे साथ सम्पन्न किया।

भगवान शंकर ने पार्वती को बताया कि जो स्त्री इस व्रत को श्रद्धापूर्वक करेगी, उसे तुम्हारे समान ही अचल सुहाग मिलेगा।



जन्माष्टमी

भाद्रपद कृष्णष्टमी को 'जन्माष्टमी' उत्सव मनाया जाता है। इन दिन मथुरा नगरी में श्रीकृष्ण का जन्म कंस के कारागार में हुआ। कृष्ण जन्मोत्सव के रूप में मंदिरों में जगह-जगह कीर्तन एवं झांकियां सजाई जाती हैं। रात्रि के बारह बजे तक व्रत रख कर पंजीरी का प्रसाद लिया जाता है। भगवान की प्रतिमा पर हल्दी, दही, घी आदि छिड़क कर उन्हें आनन्द से पालने में झुलाया जाता है। बधावे गाए जाते हैं। भगवान कृष्ण की विधिवत् पूजा अर्चना की जाती है।

पौराणिक ग्रन्थों के अनुसार द्वापर युग में जब पृथ्वी पाप तथा अत्याचारों के भार से दबने लगी, तो वह गाय का रूप बनाकर सृष्टिकर्ता ब्रह्माजी के पास गई। ब्रह्माजी ने सब देवताओं के सामने पृथ्वी की दुखान्त कथा रखी। उसके दुःख निवारण के लिए सभी देवगण पृथ्वी को साथ लेकर क्षीरसागर पहुंचे। वहां भगवान विष्णु शेष शैया पर शयन कर रहे थे। स्तुति करने पर भगवान की निद्रा भंग हुई और उन्होंने आने का कारण पूछा। तब पृथ्वी बोली- 'महाराज! मेरे ऊपर बहुत अत्याचार हो रहे हैं, इसका निवारण करें।' यह सुनकर भगवान बोले- 'मैं ब्रजमण्डल में वसुदेव गोप की भार्या और कंस की बहन देवकी के गर्भ से जन्म लेता हूँ, तुम लोग आज्ञाश्रम में जन्म लेते हो, तुम लोग अपने कर्मों में अपना शरीर

धारण करो।' वही देवता तथा पृथ्वी ब्रज में आकर यदुकुल में नन्द, यशोदा तथा गोपियों के रूप में पैदा हुए। कुछ दिन बाद वसुदेव और देवकी का विवाह हुआ। कंस रोते हुए अपनी बहन को विदा कर रहा था, तभी अचानक आकाशवाणी हुई कि 'तेरी बहन देवकी के गर्भ का आठवां पुत्र तेरा काल होगा।' कंस यह सुनते ही देवकी का वध करने लगा, तब वसुदेव ने विनती की- 'देवकी बेकसूर है, इसे मारना उचित नहीं।

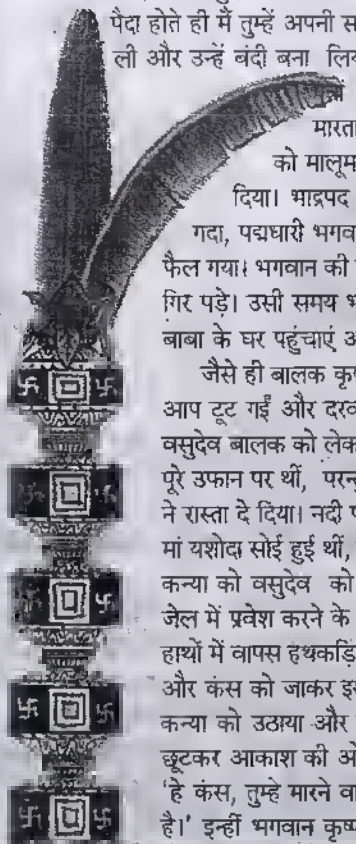
पैदा होते ही मैं तुम्हें अपनी सारी सन्तानें सौंप दूंगा।' कंस ने उनकी बात मान ली और उन्हें बंदी बना लिया। अपने वादे के अनुसार वसुदेव अपने सभी

पुत्रों को कंस को सौंपता गया तथा पापी कंस उनको मारता गया। देवकी के आठवें गर्भ की बात जब कंस

को मालूम हुई, तो उन दोनों को विशेष कारागार में डाल दिया। भाद्रपद की अष्टमी की अर्द्धरात्रि में जब शंख, चक्र,

गदा, पद्मधारी भगवान् कृष्ण का जन्म हुआ, तो चारों ओर प्रकाश फैल गया। भगवान की यह लीला देखकर वसुदेव और देवकी चरणों में गिर पड़े। उसी समय भविष्यवाणी हुई कि बालक को गोकुल में नन्द बाबा के घर पहुंचाएं और वहां से कन्या लाकर कंस को सौंपें।

जैसे ही बालक कृष्ण को गोद में उठाया, वसुदेव की बेड़ियां अपने आप टूट गईं और दरवाजे भी स्वतः खुल गए। पहरेदार सो गए और वसुदेव बालक को लेकर गोकुल की तरफ बढ़ गए। बीच में यमुना नदी पूरे उफान पर थी, परन्तु जैसे ही कृष्ण के चरणों का स्पर्श हुआ, नदी ने रास्ता दे दिया। नदी पार करके वसुदेव गोकुल गए। दरवाजा खुला, मां यशोदा सोई हुई थीं, तब नन्द बाबा ने कृष्ण को वहां सुला दिया और कन्या को वसुदेव को दे दिया। वसुदेव कन्या को लेकर लौट आए। जेल में प्रवेश करने के बाद, दरवाजे पूर्ववत् बन्द हो गए। वसुदेव के हाथों में वापस हथकड़ियां पड़ गईं। कन्या रोने लगी, सोए प्रहरी उठ गए और कंस को जाकर इसकी सूचना दी। सूचना पाते ही कंस ने आकर कन्या को उठाया और पत्थर पर पटकना चाहा, किन्तु कन्या हाथ से छूटकर आकाश की ओर उड़ कर देवी रूप में प्रकट हुई और बोली- 'हे कंस, तुम्हें मारने वाला तो गोकुल में बहुत पहले ही पैदा हो चुका है।' इन्हीं भगवान कृष्ण ने बड़े होकर बकासूर, पूतना एवं क्रूर कंस



जैसे अष्टमारी राक्षसों का वध कर पृथ्वी तथा यज्ञों की रक्षा की।

गणेश चतुर्थी

(17)

भाद्रपद शुक्ल पक्ष की चौथ को गणेश चतुर्थी का व्रत किया जाता है। इसकी कथा इस प्रकार है कि किसी समय भगवान शंकर कैलास पर्वत से भोगवती नामक स्थान पर गए हुए थे। उसी समय पार्वती ने स्नान करने हुए अपने शरीर के मेल से एक पुतला बनाया और जल के छींटे देकर उसे सजीव किया। मेल से बने उस पुत्र का नाम देवी पार्वती ने गणेश रखा। गणेश को पार्वती ने आज्ञा दी कि- 'मैं स्नान करूँ, तब तक तुम द्वार पर पहरा दो, यह ध्यान रहे कि कोई भी व्यक्ति अन्दर प्रवेश नहीं कर पाए।'

थोड़ी ही देर बाद जब भगवान शंकर भोगवती से वापस लौटे, तो उन्हें घर में प्रवेश करने पर गणेश ने रोक दिया। अनजान बालक द्वारा इस प्रकार रोके जाने से भगवान शंकर क्रोधित हो उठे और उन्होंने अपने त्रिशूल से बालक गणेश का सिर काट दिया और भीतर चले गए। टेढ़ी भुंकुटि वाले शिव जब अन्दर पहुँचे, तो पार्वती ने महादेव को देखकर मन में विचार किया कि कदाचित् भोजन में विलम्ब होने के कारण भगवान कुपित हैं, इसलिए उन्होंने तुरन्त भोजन तैयार करके दो थालों में परोसकर भोजन करने का निवेदन शिव से किया। दो थालों में परोसा भोजन देखकर भगवान शिव ने पार्वती से पूछा कि 'यह दूसरा

थाल किसके लिए लगाया है?' पार्वती ने उत्तर दिया 'बाहर द्वार पर पहरा देने वाले आपके लाड़ले पुत्र गणेश के लिए है।' यह सुनकर भगवान शिव बोले कि 'मैंने तो उसकी जीवन लीला ही समाप्त कर दी

है।' महादेवजी की बात सुनकर पार्वती जी अत्यन्त व्याकुल हो विलाप करने लगीं। पार्वतीजी ने प्रिय पुत्र गणेश को पुनः जीवित करने के लिए भगवान शंकर से प्रार्थना की। पार्वती को प्रसन्न करने के लिए शिवजी ने तुरन्त पैदा हुए हाथी के बच्चे का सिर काटकर बालक के घड़ से जोड़कर उसे सजीव कर दिया। पार्वती अपने पुत्र गणेश को पाकर अत्यन्त प्रसन्न हुईं। उन्होंने पति व पुत्र को भोजन करवाया और स्वयं भी किया। यह घटना भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी को घटित हुई, इसलिए इसे 'गणेश चतुर्थी' के रूप में मनाया जाता है।



कार्तिक पूजा

कार्तिक महीने के व्रत आसोज की पूर्णिमा से कार्तिक की पूर्णिमा तक किए जाते हैं। इन दिनों गंगा स्नान का विशेष महत्व है।

कथा- पौराणिक कथाओं के अनुसार एक सास-बहू ने कार्तिक स्नान करने का निश्चय किया। सास कार्तिक नहाने तीर्थ राज जाने लगीं, तो बहू ने भी साथ जाने की इच्छा प्रकट की। सास ने बहू को यह कहते हुए मना कर दिया कि - 'अभी तुम्हारी कार्तिक नहाने की उम्र नहीं है, तुम बाद में जाना।' यह कहकर सास तीर्थ चली गई।

सास के जाने के बाद बहू ने कुम्हार के यहां से तैतीस मिट्टी के कुण्ड मंगवाकर रख लिए। वह रोजाना रात्रि में एक कुण्ड पानी से भरकर रख लेती और सबैरे जल्दी उठ स्नान कर कुण्ड को छत पर उल्टा रखकर विधि-विधान से पूजा करती।

इधर एक दिन सास की नथ नहाते हुए गंगाजी में गिर गई। उधर बहू हमेशा की तरह नहाते समय बोली - 'सास नहाए उण्डे, मैं नहाऊं कुण्डे', उसी समय अचानक गंगाजी की धारा बहू के कुंड में आई। उसी में उसकी सास की नथ भी आ गई।

बहू ने कुंड में आई नथ को देखा तो वह पहचान गई कि यह तो सास की है।

इस तरह दोनों को नहाते हुए पूरा एक महीना बीत गया। सास जब वापस लौटकर अपने घर आई, तो बहू ने सास की खूब आवभगत की। उसी समय सास ने देखा कि उसकी गंगा में खोई हुई नथ बहू ने पहन रखी है, तो पूछा - 'यह नथ तुम्हारे पास कहां से आई?' बहू ने उत्तर देते हुए वह पूरी घटना सास को बता दी जब कुण्ड में गंगाजी की धारा के साथ नथ आ गई थी। सास को इस घटना पर बड़ा आश्चर्य हुआ, लेकिन वह चुप रही।

कार्तिक स्नान के बाद सास ने ब्राह्मणों को भोजन कराने की इच्छा व्यक्त करते हुए बहू से कहा - 'मुझे ब्राह्मणों को भोजन कराना है।' इस पर बहू ने अग्रहपूर्वक सास से विनती की कि - 'मांजी आप चार ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहती हैं, तो दो मेरे भी जोड़ दें, क्योंकि मैंने भी कार्तिक स्नान किया है।' बहू की बात सुनकर सास ने फिर प्रश्न किया - 'तुम कहां कार्तिक नहाई हो? गंगा तीर्थ तो मैं जाकर आई हूँ?'

तब बहू ने सासू मां को छत पर ले जाकर वह कुण्ड दिखाए जिसमें उसने कार्तिक स्नान किया था। सास ने देखा कि मिट्टी के वे कुंड सोने के हो गए हैं। यह देख सास ने बहू से कहा - 'बहू तुम्हारा भाग्य अच्छा है, जो गंगा की धारा कुंड में आ गई। सारे कुंड सोने के हो गए। मैं अहंकारवश तीर्थ गई थी, लेकिन वहां भी मुझे कुछ नहीं मिला। तुमने सच्ची श्रद्धा और भक्ति

से कार्तिक स्नान किया है, इसीलिए भगवान् ने तुम्हें शम्भा राजा कुंड यही दे दिया।

करवा चौथ

(19)

करवा चौथ का व्रत कार्तिक कृष्ण पक्ष की चन्द्रोदयी व्यापिनी चतुर्थी को किया जाता है। यह सौभाग्यवती स्त्रियों का प्रमुख व्रत है। सौभाग्यवती स्त्रियां अपने सुहाग की रक्षा एवं कल्याणार्थ यह व्रत करती हैं।

कथा- पौराणिक कथाओं के अनुसार एक साहूकार था। उसके सात बेटे और एक बेटी रत्नावती थीं। सभी बेटों एवं बेटी का विवाह हो चुका था। विवाह के पश्चात् रत्नावती पीहर में आई हुई थी। सेठानी सहित उसकी बहुओं और बेटी रत्नावती ने करवा चौथ का व्रत रखा हुआ था। रात्रि को साहूकार के बेटे जब अपने काम-धंधे से वापस लौटकर घर आए और भोजन करने लगे, तो उन्होंने अपनी बहन रत्नावती को भी भोजन करने के लिए बुलाया। इस पर बहन ने उत्तर दिया- 'भाई आज मैंने करवा चौथ का व्रत रखा है। चांद के दर्शन कर अर्घ्य देकर भोजन करूंगी।'

बहन का उतरा हुआ चेहरा तथा उत्तर सुनकर भाइयों ने पहाड़ी के पीछे अग्नि जला दी और छलनी की ओट से प्रकाश दिखाते हुए बहन से कहा- 'बहना चांद निकल आया है। अर्घ्य देकर भोजन कर लो।' यह सुनकर रत्नावती ने अपनी भाभियों से भी कहा- 'आओ तुम भी चन्द्रमा को अर्घ्य दे लो।'

भाभियों ने रत्नावती को समझाया कि उसके भाइयों ने



उसके साथ छल किया है। अभी चांद नहीं निकला है, लेकिन रत्नावती ने भाइयों की बात मान ली और अर्घ्य देकर भोजन करने बैठ गई। रत्नावती ने जैसे ही पहला निवाला तोड़ा तो उसमें बाल आ गया। दूसरे निवाले पर छींक तथा तीसरा निवाला लेते ही ससुराल से पति की अकुशलता के समाचार मिले।

इससे रत्नावती को शंका होने लगी कि उसका व्रत भंग हो गया है।

इधर मां ने बेटी को विदा करने के लिए संदूक खोला, तो शुभ

सुख के वस्त्र नहीं मिले। विदा करते हुए मां ने

बेटी को वही वस्त्र एवं एक सोने का टका देते

हुए कहा- 'ससुराल में सभी के पैर छूना और जो

भी तुम्हें अखण्ड सौभाग्यवती का आशीष दे, उसे यह

टका दे देना।'

रास्ते में चलते समय किसी ने भी रत्नावती को अखण्ड सौभाग्यवती का आशीर्वाद नहीं दिया। जब वह ससुराल पहुंची, तो दरवाजे पर उसकी छोटी ननद खड़ी थी। जब रत्नावती उसके पांव लगी, तो उसने उसे अखण्ड सौभाग्य का आशीर्वाद दिया।

आशीष सुनकर रत्नावती ने ननद को सोने का टका दे दिया। जब वह घर के भीतर गई तो, सास ने कहा कि- 'तेरा पति धरती पर पड़ा है।' रत्नावती ने अपने मृत पति को जलाने से मना कर दिया।

इस पर गांव वालों ने उसके लिए एक झोंपड़ी गांव से बाहर बनवाकर उसके रहने की व्यवस्था कर दी। भोजन हमेशा उसकी ननद पहुंचाती।

समय बीतता गया- मार्गशीर्ष की चौथ आई, तो चौथ माता बोली- 'करवा ले करवा ले, भाइयों की प्यारी करवा ले, लेकिन जब उसे चौथ माता दिखाई नहीं दी, तो वह बोली- 'हे माता, आपने मझे उजाड़ा, तो आप ही मेरा उद्धार करेंगी,



आप को मेरा सुहाग देना पड़ेगा।' तब उस चौथ माता ने बताया कि- 'पौष की चौथ आएगी। वह मेरे से बड़ी है। वही तुम्हारा सुहाग तुम्हें वापस देगी।'

इसी प्रकार सभी चौथ क्रमशः यही कहकर चली गईं कि आगे वाली को कहना। आसोज की चौथ आई, तो उसने बताया कि- 'तुमसे कार्तिक की चौथ नाराज है। उसी ने तुम्हारा सुहाग लिया है और वही वापस कर सकती है। अतः जब कार्तिक की चौथ आए तो उनके पांव पकड़कर विनती करना।' यह कहकर वह भी चली गई।

जब कार्तिक की चौथ आई तो वह गुस्से से बोली- 'भाइयों की प्यारी करवा ले, दिन में चांद उगावनी करवा ले, व्रत खण्डन करने वाली करवा ले।' यह सुनकर रत्नावती ने चौथ माता के पैर पकड़ लिए और विनती करने लगी- 'हे माता, मुझसे भूल हुई है, मुझे क्षमा करें, अब कभी भूल नहीं करूंगी। मेरा सुहाग आपके हाथों में है। आप ही मुझे सुहागिन करें।'

तब चौथ माता ने प्रसन्न होकर आंखों से काजल, नाखूनों से मेहदी, टीके से रोली लेकर तर्जनी अंगुली से उसके पति पर छीटा दिया। वह उठकर बैठ गया और उसकी झोंपड़ी भी महल में परिवर्तित हो गई। पति बोला- 'आज मैं बहुत सोया।' तब रत्नावती ने बताया कि आप तो एक वर्ष से सो रहे थे, अब करवा चौथ की कृपा से आपको नया जीवन मिला है। दोनों खुशी-खुशी चौपड़ खेलने लगे, जब हमेशा की भांति नन्द खाना लेकर आई, तो वहां झोंपड़ी दिखाई न देने के कारण परेशान होने लगी। तभी भाई-भाभी ने महल के ऊपर से बहन को आवाज दी।

वहन ने जब भाई को देखा तो वह दौड़ी-दौड़ी यह शुभ सूचना लेकर मां के पास गई। मां ने जब यह शुभ समाचार सुना, तो तुरन्त सभी परिजनों के साथ गाजे-बाजे से बहू को लेने आई। सास बहू के पैरों पड़ कहने लगी 'तेरे कारण मेरा बेटा मुझे वापस मिला है।' तब बहू बोली- 'मांजी हम सबको चौथ

अहोई अष्टमी

कार्तिक कृष्ण पक्ष की अष्टमी या सप्तमी के दिन यानी जिस वार की दीपावली हो, उसके एक सप्ताह पहले उसी वार को अहोई अष्टमी का व्रत किया जाता है। पुत्र की दीर्घ आयु एवं सुख-समृद्धि के लिए माताएं अहोई माता की पूजा करके यह व्रत रखती हैं।

कथा- एक नगर में एक साहूकार रहता था। उसके सात पुत्र और एक पुत्री थी।

साहूकार के सभी बेटे-बेटियाँ विवाहित थे।

एक दिन साहूकार के बेटों की बहूएं अपनी ननद के साथ मिट्टी खोदने गईं। मिट्टी खोदते समय साहूकार की बेटी से संयोगवश कुदाली स्याऊ के बच्चे को लग गई, जिससे उसकी मृत्यु हो गई। अनजाने में हुए इस पाप से बेटी को बहुत दुःख हुआ।

स्याऊ को जब ज्ञात हुआ कि इसने मेरे बच्चे को मार डाला है, तो उसने ननद की कोख बांधनी चाही। तब ननद ने अपनी भामियों से आग्रह किया कि वे मेरी बजाए अपनी कोख बांधवा

लें। इस पर छहों बड़ी भामियों ने कोख बांधवाने से मना कर दिया, लेकिन सबसे छोटी भावज ने ननद के बदले अपनी कोख यह सोचकर बांधवा ली कि जेठानियों के बेटा-बेटी भी तो मेरे ही बच्चों के समान होंगे। यदि ननद की कोख बांध गई, तो इससे सास की भी दुःख होगा। समय बीतता गया और छोटी बहू के जन्मे सातों बेटे एक के बाद एक मरते

चले गए। इससे दुःखी होकर छोटी बहू ने ननद की कोख बांधवा ले ली। तब सास ने

मुक्ति पाने के उपाय पूछे। इस पर पंडितों ने बताया कि 'तुम गऊ' की पूजा करो। वह स्याऊ माता की बहन है। वह कहेगी तो स्याऊ तुम्हारी कोख खोल देगी।

छोटी बहू प्रतिदिन गऊ की पूजा करने लगी। सेवा-पूजा से प्रसन्न हो एक दिन गऊ माता ने कहा- 'तुझे मेरी सेवा करते बहुत दिन हो गए हैं, बता क्या चाहती है?' तब साहूकार की बहू ने पूरी घटना गऊ को सुनाते हुए कहा- 'स्याऊ से मेरी कोख छुड़वा दे।' गऊ ने कहा- 'कल सबैरे अंधेरे में आना' अगले दिन वह जल्दी ही गऊ के पास गई। उसे लेकर घने जंगल में स्याऊ माता के पास आई। स्याऊ ने गऊ को देखकर कहा, आओ बहन बहुत दिनों में आई हो। यह तुम्हारे साथ कौन है?'

गऊ बोली- 'यह मेरी भक्त है और सेवा करती है। तब स्याऊ बोली मुझे भी मेरे बच्चों की रखवाली के लिए किसी की आवश्यकता है।' इस पर छोटी बहू ने स्याऊ के बच्चों की रखवाली करने की बात स्वीकार ली और वह वहीं रहने लगी। बहू उन सबकी खूब सेवा करती। यह देख एक दिन स्याऊ बोली 'तुम इतनी उदास क्यों रहती हो?' बहू की आंखों में आंसू आ गए। बहू को रोता देख स्याऊ ने कहा - 'मुझे बता क्या बात है, मैं तेरा संकट दूर करूंगी।' इस पर बहू बोली- 'वचन दों।' स्याऊ ने वचन दे दिया। तब उसने अपनी कोख बन्धने वाली सारी घटना स्याऊ को बता दी। तभी स्याऊ ने कहा- 'तूने मुझे उग लिया है, लेकिन कोई बात नहीं, मैं तेरी कोख खोलती हूँ आज से तेरी कोई भी संतान नहीं मरेगी।' इसके बाद स्याऊ ने बहुत सारा धन देकर बहू को वहां से विदा किया। बहू ने घर आकर देखा तो उसके मरे हुए सातों बेटे जीवित मिले। उस दिन अहोई का व्रत था। सभी ने साथ-साथ अहोई का व्रत रखा, कथा कही एवं पूजा की।

राजस्थान के धर्म-प्राण श्रद्धालु नर-नारी सदियों से विभिन्न त्यौहारों, पर्वों और धार्मिक अवसरों पर व्रत-कथाएं कहते- सुनते आ रहे हैं। जैसा कि लोक साहित्य की मौखिक परम्परा में होता है, विभिन्न अंचलों में इनके स्वरूप में थोड़ा बहुत अन्तर होता रहता है, पर तत्त्वतः उनकी विषय-वस्तु एक सी ही हैं।

ये कथाएं मौखिक परम्परा में जीवित हमारी आस्था और विश्वास को प्रतिबिम्बित करती हैं। ऐसी ही कुछ चुनी हुई कथाएं इस पुस्तिका में संकलित की गई हैं।

सामग्री सौजन्य: कुसुम बापना
चित्रांकन: प्रतिमा सिंह

छायाचित्र: राकेश शर्मा
आवरण चित्र सौजन्य: बी.जी. शर्मा

भैया-दूज

यह त्योहार कार्तिक शुक्ल पक्ष की द्वितीया को मनाया जाता है। ऐसा कहा जाता है कि इस दिन सूर्य-पुत्री यमुनाजी ने अपने भाई यमराज को भोजन कराया था। इसलिए इसे यम द्वितीया भी कहा जाता है।

कथा- पौराणिक कथाओं के अनुसार सूर्य की पत्नी संज्ञा के दो संतानें थीं। उनमें पुत्र का नाम यमराज और पुत्री का नाम यमुना था। संज्ञा अपने पति सूर्य की उद्दीप्त किरणों को सहन नहीं कर सकने के कारण उत्तरी ध्रुव में छाया बनकर रहने लगीं। इसी से ताप्ती नदी तथा शनिश्चर का जन्म हुआ। इसी छाया से अश्विनी कुमारों का भी जन्म हुआ है, जो देवताओं के वैद्य माने जाते हैं।

उत्तरी ध्रुव में बसने के बाद संज्ञा [छाया] का यम तथा यमुना के साथ व्यवहार में अंतर आ गया। इससे व्यथित होकर यम ने अपनी नगरी 'यमपुरी' बसाई। 'यमुना अपने भाई यम को यमपुरी में पापियों को दण्ड देते देख दुःखी होती, इसलिए वह गो लोक में चली गई। समय व्यतीत होता रहा। तब काफी सालों के बाद अचानक एक दिन यम को अपनी बहन यमुना की याद आई। यम ने अपने दूतों को यमुना का पता लगाने के लिए भेजा, लेकिन वह कहीं नहीं मिली, फिर यम स्वयं गो लोक गए, जहां यमुना जी की उनसे भेंट हुई। इतने दिनों बाद यमुना अपने भाई से मिलकर बहुत प्रसन्न हुईं। यमुना ने भाई का स्वागत किया और बढ़िया भोजन करवाया। इससे भाई यम ने प्रसन्न होकर बहन से वरदान मांगने के लिए कहा, तब यमुना ने वर मांगा कि- 'हे भैया, मैं चाहती हूं कि जो भी मेरे जल में स्नान करे, वह यमपुरी नहीं जाए।' वर सुनकर यम चिंतित हो उठे और मन ही मन विचार करने लगे कि ऐसे वरदान से तो यमपुरी का अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा। भाई को चिन्तित देख, बहन बोली- 'भैया आप चिन्ता नहीं करें- मुझे यह वरदान दे कि- 'जो लोग आज के दिन बहन के यहां भोजन करे तथा यमुना नगरी स्थित विश्रामघाट पर स्नान करे, वे यमपुरी नहीं जाए।' यमराज ने इसे स्वीकार कर वरदान दे दिया। बहन-भाई मिलने के इस पर्व को अब भैया-दूज के रूप में



मनाया जाता है।

आंवला नवमी

25

कार्तिक शुक्ल पक्ष नवमी को आंवला नवमी का व्रत किया जाता है। इस दिन आंवले के वृक्ष की पूजा होती है।

कथा- पौराणिक कथाओं के अनुसार काशी नगरी में एक धार्मिक प्रवृत्ति के वणिक दम्पति रहते थे। उनके कोई संतान नहीं थी। इस कारण वे दोनों उदास रहते थे। वणिक की उदास पत्नी को देख उसकी एक सखी ने कहा कि 'यदि तुम किसी बच्चे की बलि भैरव के नाम चढ़ा दो, तो तुम्हें पुत्र प्राप्ति हो सकती है।'

पत्नी ने यह बात जब अपने पति को बताई तो उसने बलि चढ़ाने से मना कर दिया, परन्तु वणिक की पत्नी इस बात को भूली नहीं। मौका पाकर एक दिन उसने एक बच्चे को भैरव देवता के नाम पर कुएं में गिरा कर बलि दे दी।

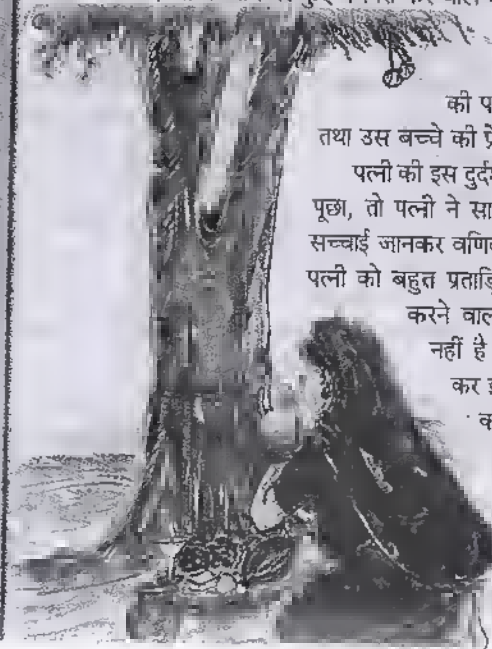
इस हत्या का परिणाम उल्टा हुआ। लाभ के स्थान पर वणिक

की पत्नी के शरीर में कोढ़ निकल आए

तथा उस बच्चे की प्रेत आत्मा उसे सताने लगी।

पत्नी की इस दुर्दशा को देख वणिक ने इसका कारण पूछा, तो पत्नी ने सारी घटना उसे सच-सच बता दी। सच्चाई जानकर वणिक बहुत दुखी हुआ। उसने अपनी पत्नी को बहुत प्रताड़ित किया और कहा- 'बाल वध करने वालों के लिए संसार में कहीं जगह नहीं है। अंतः गंगा तट पर जाकर स्नान कर ईश्वर वन्दना करने से ही तुम इस कष्ट से मुक्ति पा सकती हो।'

पति की आज्ञानुसार वणिक की पत्नी गंगा तट पर गई और वहीं रहने लगी। वणिक की पत्नी किनारे रहते हुए प्रतिदिन श्रद्धा से पूजा करती। इस तरह जब थोड़े दिन बीत गए तो एक दिन गंगा



मैया वृद्धा का रूप धारण करके आई और वणिक् की पत्नी से बोली- 'हे दुखिया तुम मथुरा नगरी जाकर कार्तिक नवमी का व्रत रखो। आंवले के वृक्ष की परिक्रमा करते हुए पूजा करना। इस व्रत के प्रभाव से तुम्हारे सभी कष्ट दूर होंगे।' घर आकर वणिक् की पत्नी ने गंगा मैया द्वारा कही गई सारी बात पति को बताई। पति ने पत्नी की भलाई के लिए मथुरा नगरी को प्रस्थान किया।

जब कार्तिक नवमी आई, तो पत्नी ने व्रत रखा और आंवले के वृक्ष की पूजा कर परिक्रमा दी। इस व्रत के प्रताप से वह पुनः दिव्य शरीर वाली हो गई और उसे पुत्र धन की प्राप्ति हुई। अन्त में वह स्वर्ग लोक में गई।

तिल चौथ

सकट चौथ का व्रत माघ मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्थी की किया जाता है। इस दिन गणेश जी और चन्द्रमा की पूजा की जाती है। कहीं-कहीं इसे तिल चौथ भी कहा जाता है।

कथा- एक साहूकार दम्पति थे जिनके कोई संतान नहीं थी। एक दिन साहूकार की पत्नी अपनी पड़ोसन के यहां अग्नि लेने गई। वहां उसने देखा कि पड़ोसन एवं कुछ अन्य महिलाएं पूजन कर, कथा सुन रही हैं। यह देख उसने पूछा- 'आप सब किसकी पूजा एवं व्रत कर रही हैं तथा इस व्रत के करने से क्या फल मिलता है।' पड़ोसन ने साहूकार की पत्नी को बताया कि यह चतुर्थी की पूजा है, इस दिन व्रत करने तथा कथा कहने-सुनने से बिछड़े हुए मिल जाते हैं, सुख समृद्धि एवं संतान की प्राप्ति होती है। यह सुन साहूकारनी ने वहीं संकल्प किया कि 'यदि मेरे कोई संतान हो जाएगी, तो मैं भी सवा सेर का तिलकुटा चढ़ाऊंगी।'।

सकट चौथ माता ने उसकी मनोकामना पूरी की और नौ माह पश्चात् उसे पुत्ररत्न की प्राप्ति हुई, परन्तु वह तिलकुटा चढ़ाना भूल गई। इसके बाद उसके छह बेटे और हुए, फिर भी उसने तिलकुटा चढ़ाने की याद नहीं आई। सातों बेटे बड़े होने लगे।

उसने बड़े बेटे के विवाह के लिए फिर से मन्नत मांगते हुए कहा- 'यदि मेरे बेटे का विवाह हो जाए, तो सवा मन का तिलकुटा चढ़ाऊंगी।'।

विवाह की सभी तैयारियां होने लगीं, फिर भी साहूकारनी तिलकुटा चढ़ाना भूल गई। जब उसका बेटा फेरों में बैठ गया तो चौथ विनायक ने सोचा कि यह साहूकारनी हर बार

तिलकुटा बोल तो देती है लेकिन चढ़ाती एक भी बार नहीं। अब तो इसके बेटे का विवाह भी सम्पन्न होने जा रहा है, अगर हम इसे चमत्कार नहीं दिखाएंगे, तो हमें कौन मानेगा?' इतना कह चौथ माता ने दूल्हे को फेरों में से उठाकर गांव के बाहर पीपल के वृक्ष पर बैठा दिया।

दूल्हे के अचानक इस प्रकार फेरों में से गायब हो जाने से उपस्थित लोगों में हाहाकार मच गया। सभी तरफ दूल्हे को ढूंढा गया, लेकिन वह कहीं नहीं मिला और दिन बीतते गए।



जब गणगौर पूजने के लिए गांव के बाहर से दूब लेने जाती तो वह लड़की भी उनके साथ जाती जिसका पति फेरों में से गायब हो गया था। सब सहेलियां जब राह में एक पीपल के समीप से गुजरती तो पीपल पर बैठा उसका दूल्हा उसे देख कर कहता 'आए म्हारी अद ब्याही हुई।' यह आवाज सुन कर वह लड़की चिन्तित होती। इसी चिन्ता से वह दुबली होती जा रही थी। तब मां ने दुबली होने का कारण पूछा, तो बेटी ने बताया कि- 'मैं जब भी गणगौर पूजने के लिए दूब लेने जाती हूं तो पीपल में से एक आदमी बोलता है 'आए म्हारी अद ब्याही हुई।' उसने दूल्हे के कपड़े पहन रखे हैं तथा हाथों में मेहन्दी लगा रखी है। सिर पर सेहरा बांध रखा है।' बेटी की बात सुनकर मां उस वृक्ष को देखने आई। मां ने देखा तो वह तो उसी का दामाद है, जो फेरों पर से अचानक गायब हो गया था। उसने अपने दामद से वहां बैठने का कारण पूछा तो दूल्हे ने कहा- 'मैं चौथ के यहां गिरवी हूं। मेरी मां ने तिलकुटा बोला था और चढ़ाया नहीं। इस कारण चौथ नाराज है और उन्होंने मुझे यहां बैठा रखा है।'

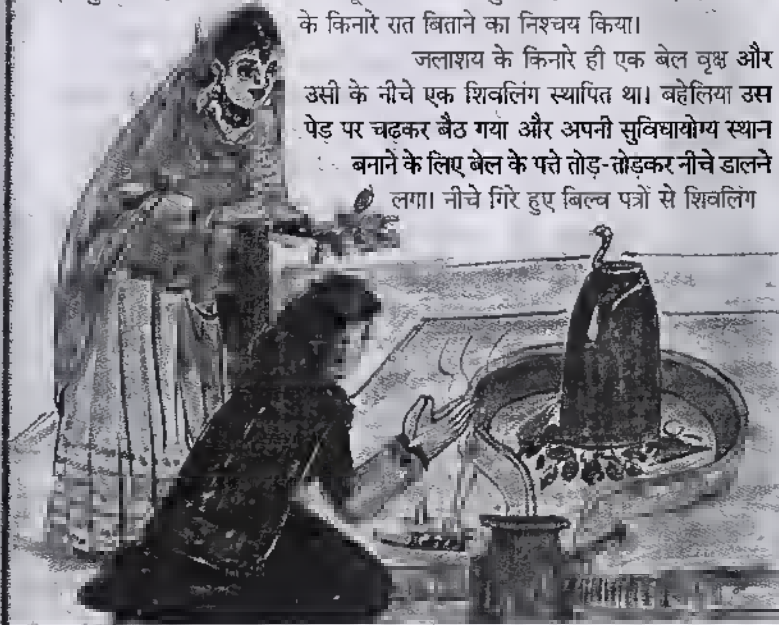
दामाद की बातें सुनकर सास उसी समय उसकी मां के पास गई और सारी बातें उन्हें बताईं? साहूकारनी ने उसी दिन ढाई मन का तिलकुटा चढ़ाकर चौथ माता के भोग लगाया और पूजा की। इससे चौथ माता प्रसन्न हुई। उन्होंने गिरवी रखे बेटे को छोड़ दिया और विवाह सम्पन्न हुआ। इसके पश्चात् साहूकारनी हर चौथ का चत

महाशिवरात्रि

फाल्गुन कृष्ण पक्ष चतुर्दशी को शिवरात्रि का पर्व मनाया जाता है। लोक कथाओं के अनुसार एक गरीब बहेलिया अपने परिवार का लालन-पालन शिकार करके किया करता था। एक बार समय पर कर्ज न दे सकने के कारण साहूकार ने उसे एक शिव मठ में बंद कर दिया। उस दिन फाल्गुन-कृष्ण त्रयोदशी थी, इसलिए मंदिर में धर्म-व्रत सम्बन्धी कथा वार्ता हो रही थी। बहेलिये ने बड़े ध्यान से चतुर्दशी के दिन होने वाले महाशिवरात्रि व्रत की कथा सुनी। उसी दिन साहूकार ने उसे छोड़ दिया और अगले दिन कर्ज अदा करने का वचन बहेलिये से ले लिया।

चतुर्दशी को प्रातःकाल बहेलिया शिकार के लिए एक गहन वन में गया, परन्तु उस दिन कोई पशु उसे नहीं मिला। दिन भर की भूख-प्यास से व्याकुल बहेलिया ने तब एक जलाशय के किनारे रात बिताने का निश्चय किया।

जलाशय के किनारे ही एक बेल वृक्ष और उसी के नीचे एक शिवलिंग स्थापित था। बहेलिया उस पेड़ पर चढ़कर बैठ गया और अपनी सुविधायोग्य स्थान बनाने के लिए बेल के पत्ते तोड़-तोड़कर नीचे डालने लगा। नीचे गिरे हुए बिल्व पत्रों से शिवलिंग



आच्छादित हो गया। बहेलिया दिन भर भूखा रहने के कारण एक प्रकार से शिवरात्रि का व्रत कर चुका था और बेलपत्र भी चढ़ा चुका था।

एक पहर रात बीतने के बाद एक गर्भवती हिरणी जलाशय के किनारे आई। उसे देखते ही बहेलिये ने हिरणी को लक्ष्य करके धनुष पर बाण चढ़ाया। हिरणी भयभीत हो बहेलिये से विनती करते हुए बोली- 'हे व्याध! मैं गर्भिणी हूँ। अतः मुझे अभी न मारो, प्रसव पश्चात् मैं स्वयं तुम्हारे पास आ जाऊंगी। यदि मैं तुरन्त तुम्हारे पास न आऊँ तो कृतघ्न को जो पाप लगता है वह मुझको लगे।' हिरणी का इतना कहना था कि बहेलिये ने धनुष पर से बाण उतार लिया और हिरणी को वापस आने की प्रतिज्ञा ले छोड़ दिया। हिरणी के चले जाने पर बहेलिया शिव-शिव करते हुए किसी अन्य जानवर के आने की प्रतीक्षा करने लगा।

रात्रि की दूसरी बेला में एक अन्य मृगी उसी स्थान पर आई। बहेलिये ने जैसे ही उस पर निशाना साधा तो उसने निवर्देन किया- 'मुझे अभी अपने पति से मिलने जाना है। बाद में मैं स्वयं तुम्हारे पास आऊंगी। बहेलिये को उस पर दया आ गई। उसने उसे भी जाने दिया।'

रात्रि की तृतीय बेला में तीसरी हिरणी अपने छोटे से छौने को लेकर जलाशय पर पानी पीने आई। बहेलिये ने उसे देख धनुष बाण उठाया, तब हिरणी अत्यन्त विनम्र भाव से बोली- 'इस छौने को हिरण के संरक्षण में छोड़कर आऊँ, तब मुझे मार देना।' बहेलिया उसकी करुण पुकार से प्रभावित हुआ और उसे छोड़ दिया। हिरणी और उसकी छौने कुलांचे भरते हुए वहाँ से चले गए। रात्रि के तीसरे पहर में बहेलिये ने कुछ देर और बेल पत्र तोड़कर नीचे डाले, जो शिवजी के शीश पर चढ़ गए। इसके बाद वह शिव-शिव कहता हुआ किसी अन्य जानवर के आने की प्रतीक्षा करने लगा।

प्रातः काल से पूर्व एक बलिष्ठ भृगु उस जलाशय पर आया। बहेलिये ने उस पर निशाना साधा। यह देख हिरण बड़ी सरलता से बोला- 'हे व्याधराज! यदि आपने उन तीनों हिरणियों को मारा है, तो आप मुझे भी शीघ्र मार डालिए, जिससे उन मृत हिरणियों का दुःख मुझ को न हो।' बहेलिये ने हिरण की प्रेम एवं पांडित्यपूर्ण वाणी सुनकर रात की सारी घटनाएँ उसे सुना दी, बहेलिये की बातें सुनकर हिरण पुनः बोला- 'तीनों हिरणियाँ मेरी भार्या थीं और मुझे खोजती फिर रही थीं। यदि आप मुझको मार डालेंगे, तो वे जिस उद्देश्य से आपसे प्रतिज्ञा करके गई हैं, वह विफल हो जाएगी? शिवरात्रि व्रत के प्रभाव से बहेलिये का हृदय परिवर्तित हो गया। बहेलिये ने निश्चय किया कि हिरण के परिवार के लौटने पर भी वह उन्हें नहीं मारेगा। शिव कृपा से वह अहिंसा का पुजारी बन गया। इस प्रकार अहिंसा की चरम सीमा पर पहुँचे हुए बहेलिये को देखकर शिवजी प्रसन्न हुए। उन्होंने दो पुष्प विमान भेजकर बहेलिये तथा भृगु परिवार के प्रति लोभ का अधिकार नष्ट किया।

प्रदोष व्रत

सूर्यास्त के बाद और रात्रि के आगमन से पूर्व दोनों के बीच का समय प्रदोष कहलाता है। यह व्रत हर मास की तेरस के दिन किया जाता है। यह व्रत यदि कृष्ण पक्ष में शनिवार को आए, तो विशेष फल देने वाला माना जाता है। इसी प्रकार श्रावण के सोमवार का प्रदोष भी शुभ फल देने वाला माना गया है।

कथा- एक गांव में एक अत्यन्त गरीब ब्राह्मण रहता था। उसकी पत्नी सत्य मार्ग पर चलने वाली और धार्मिक प्रवृत्ति की थी। वह नियमित प्रदोष का व्रत किया करती थी।

एक समय की बात है कि ब्राह्मणी का पुत्र गंगा स्नान के लिए गया हुआ था। दुर्भाग्यवश रास्ते में चोरों ने उसे घेर लिया और बोले- 'तुम अपने पिता का गुप्त धन बतला दो, वरना हम तुझे मार डालेंगे।' बालक ने बड़ी विनम्रता से उत्तर दिया कि- हम लोग बहुत गरीब हैं, हमारे पास धन कहां है?' चोरों ने बालक की पोटली की ओर इशारा करते हुए पूछा- 'तेरी पोटली में क्या बंधा है?'

बालक ने निस्संकोच उत्तर दिया- 'इसमें मेरी मां ने रोटी बांधी है।' एक साथी चोर ने उसे गरीब समझ कहा- 'इस बालक को जाने दो, यह अति दीनहीन और गरीब है।' चोरों ने बालक को जाने दिया। बालक चलते-चलते एक नगर के समीप पहुंचा, वहीं एक बड़ का वृक्ष था। बालक उसकी छाया में बैठ गया। थकावट के कारण उसे नींद आ गई और वह वट वृक्ष के नीचे सो गया।

उधर राज्य के सिपाही चोरों की खोज करते हुए उस बालक के पास आ गए। सिपाही बालक को चोर समझकर राजा के पास ले गए। राजा ने भी उसे चोर समझकर कारावास की आज्ञा दे दी। उधर बालक की मां प्रदोष का व्रत कर रही थी। व्रत के प्रभाव से उसी रात राजा को स्वप्न दिखाई दिया कि तुमने जिस बालक को कारागार में बन्द कर रखा है, वह निर्दोष है, उसे प्रातः छोड़ देना, अन्यथा तुम्हारा राज-पाट शीघ्र नष्ट हो जाएगा। प्रातःकाल होते ही राजा ने सिपाहियों को आज्ञा दी कि बालक को कारावास से सम्मान बुलाकर मेरे पास लाओ। सिपाही बालक को लेकर राजा के समक्ष उपस्थित हुए, तो राजा ने बालक से सब वृत्तान्त पूछा। वृत्तान्त सुनने के पश्चात् राजा ने सिपाहियों को भेजकर बालक के माता-पिता को अपने दरबार में बुलवा लिया। राजा ने ब्राह्मण और ब्राह्मणी को भयभीत देखकर कहा- 'तुम भय मत करो। तुम्हारा बालक निर्दोष है। हम तुम्हारी दरिद्रता देखकर पांच गांव तुम्हें दान में देते हैं।' इस प्रकार प्रदोष व्रत के प्रभाव एवं भोलेनाथ की कृपा से ब्राह्मणी एवं उसका

परिवार खुश से रहने लगे।

पथवारी माता की कहानी

(31)

यह कथा शीतला अष्टमी तथा कार्तिक पूजा के समय पथवारी पूजते समय अन्य कहानियों के साथ कही जाती है।

कथा- पौराणिक कथाओं के अनुसार एक गृहणी माई थी। उसके दो बहनें थी। दोनों बहनों को सास ने दूध बेचने के लिए पास के गांव में भेजा। बड़ी बहू काफी होशियार थी और पैसों का हिसाब भी रखना जानती थी, इसलिए रोज दूध बेचकर सारे पैसे लाकर सास मां को दे देती थी।

इसके विपरीत छोटी बहू बहुत भोली थी। उसे हिसाब लगाना नहीं आता था। एक दिन जब वह दूध बेचने जा रही थी, तब उसने देखा कुछ महिलाएं-पथवारी पूजन कर रही हैं तथा जल से पीपल के वृक्ष को सींच रही हैं। बहू ने उन महिलाओं से पूछा- 'पथवारी पूजन और सींचने से क्या फल मिलता है?' इस पर उन महिलाओं ने उसे बताया 'पथवारी माता सींचने तथा पूजने से अन्न, धन एवं लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। महिलाओं की बातें सुनकर छोटी बहू ने दूध वहीं बड़-पीपल में चढ़ा। पथवारी माता को सींच दिया। वह प्रतिदिन इसी तरह दूध ले जाती और पथवारी माता को सींच आती। कुछ दिनों बाद जब सास ने बहू से दूध के पैसे मांगे, तो उसने दूसरे दिन खाने को कह दिया, परन्तु वह अगले दिन भी पैसे नहीं लाई। इस तरह पूरा एक महीना बीत गया। तब सास ने कहा- 'आज पैसे लेकर ही आना।' अगले दिन जब वह पैसे लेने के लिए घर से चली, तो उदास होकर पथवारी माता के चबूतरे के समीप बैठ गई। तब पथवारी माता बुढ़िया का रूप धारण करके आई और बोली- 'बेटी यहां इस तरह उदास क्यों बैठी हो?'।

बहू बोली- 'मेरी सास मुझे रोज दूध बेचने भजती थी, परन्तु मैंने तो दूध बेचना आता ही नहीं। इसलिए मैं तो पथवारी माता के ही दूध सींच देती थी। आज सास ने पैसे लेकर आने के लिए कहा है। अब आप ही बताएं मैं पैसे कहां से लाऊँ?' बुढ़िया माइ बोली- 'बेटी यह पत्थर पड़े है, इन्हें टोकरे में भरकर ले जा। इन पत्थरों को कोठे में रख देना।' बहू ने बुढ़िया माई के कहे अनुसार पत्थर टोकरे में भर लिए और घर लौटकर उन्हें कोठे में रख दिया।

हमेशा की तरह जब सास ने पैसे मांगे, तो बहू बोली- 'मां जो कोठे में रखे हैं।'।

सास ने जैसे ही कोठे का दरवाजा खोला तो देखा उसमें हीर-मोती एवं अपार धन सम्पदा पड़ी है। सास ने छोटी बहू से पूछा- 'इतनी धन-सम्पदा तुम्हें कहां से लाई?' इस पर बहू ने उत्तर दिया- मैं रोजाना पथवारी माता के सींच देती थी। उन्हीं की कृपा से यह धन मिला है? यह सारी बात जब बड़ी बहू को पता चली तो उसने सोचा छोटी तो कच्चा दूध सींचती थी, मैं गरम-गरम दूध सींचती। वह सोच वह रोजाना गरम-गरम दूध सींचने लगी। छोटी बहू की तरह पूरा महीना बीतने पर वह पथवारी माता के पास जाकर बैठ गई। पथवारी माता बुढ़िया के रूप में आई और बोली- 'बेटी क्यों चाहिए?' बड़ी बहू बोली- 'मैं रोजाना पथवारी माता के गरम-गरम दूध सींचती रही हूँ। अब सास पैसे मांग रही है। आप बताएं मुझे कहाँ से लाऊँ?' इस पर बुढ़िया माई बोली- 'यह पत्थर रखे हैं- तु भी ले जा।'।

बहू ने ढेर सारे पत्थर टोकरे में भरे और बुढ़ी मुखिल से घर के बाहर तक पहुंची कि टोकर खारकर गिर पड़ी। सारे पत्थर घर के बाहर ही गिर गए। आने-जाने वाले लोग टोकरे खाते और कोसते। वह पुनः पथवारी माता के पास जाकर बोली- 'हे माता, तुमने मेरे साथ ऐसा क्या किया?' तब पथवारी माता बोली- 'छोटी बहू ने बड़ी श्रद्धा एवं बिना लालच के दूध सींचा था और तूने लालच से मेरे ऊपर गरम-गरम दूध चढ़ाया, जिससे मेरे शरीर पर फफोले पड़ गए हैं।' बड़ी बहू को अपनी भूल का एहसास हो गया।

गणेशजी की कथा

एक अंधी गरीब बुढ़िया माई हमेशा गणेश की पूजा करती थी। उसके एक बेटा एवं बहू थी। गणेश जी उसकी पूजा पाठ से बहुत प्रसन्न थे। उन्होंने बुढ़िया को कहा- 'बुढ़िया माई मांग क्या मांगना चाहती है?' बुढ़िया बोली- 'भगवान मुझे तो कुछ मांगना नहीं आता आप ही बताएं क्या मांगू?' तब गणेश जी बोले 'अपने बेटे- बहू से पूछ ले।'

बुढ़िया ने बहू से पूछा तो वह बोली- 'सासूजी, पीता मांगना तुम्हारी अंगुली पकड़ कर चलेगा।'

बेटे से पूछा तो वह बोला- 'मां, धन मांगना बैठे-बैठे खाएंगे।'

बेटे एवं बहू की बातों ने बुढ़िया को भ्रमित कर दिया। इसी चिंता में बुढ़िया रातभर विचार करती रही। दूसरे दिन गणेश जी एक बूढ़े के रूप में बुढ़िया से मिले और उन्होंने उससे पूछा कि बुढ़िया क्यों बड़बड़ा रही है? तब वह बोली- देखो आज गणेश जी ने मुझे कुछ वर मांगने को कहा है, लेकिन बेटे का लोभ बेटे ने मांगा और बहू का लोभ बहू ने मांगा, लेकिन उन दोनों ने यह नहीं कहा- 'मां तुम अंधी हो अपनी आंखें मांगना।' तब उस बूढ़े ने बुढ़िया को सुझाव दिया कि 'माई, तुम मांगना- मैं मेरे पोते को सोने के कटोरे में दूध पीता देखना चाहती हूं।' इतना कहकर बूढ़ा अन्तर्धान हो गया।

जब बुढ़िया गणेश जी के पास गई तो गणेशजी बोले 'मांग माई क्या मांगती है? वह

बोली 'मैं अपने पोते को सोने के कटोरे में दूध पीते देखना चाहती हूं। अमर सुहाग और मोक्ष चाहती हूं।' तब गणेशजी कहते हुए गणेश जी ने उसे मुंह मांगा वरदान दे दिया।

